भगवत कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 4	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चंदा : 50.00
शनिवार 26.4.97	अप्रैल-1997	प्रति अंक : 5.00

'आत्मीय सम्राट' की जन्म जयंती के अवसर पर.....

4 मई..... प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसाद स्वामिजी का जन्म जयंती का महामंगलकारी दिन ! गुरहरि योगीजी महाराज द्वारा बख्शिस में दी दिव्य विभूति। वैसे तो ऐसे आध्यात्मिक युगपुरुष एकदम सामान्य दिखाई पड़ते हैं, पर उनके द्वारा किए गए अनोखे कार्य, उनके द्वारा तैयार हुआ समाज, उनके माहात्म्य का-उनके असली स्वरूप का दर्शन करा ही देता है। आज प.पू. स्वामिजी अनेक संतो, बहनों, युवकों, गृहस्थों के प्राणाधार बने हैं। प.पू. स्वामिजी भी अपनी देह गिने बिना दिन-रात, देश-विदेश में अविरत परिश्रम कर रहे हैं। निरन्तर कथावार्ता कर-करके हमें बल, सूझ, प्रेरणा दे रहे हैं। आध्यात्मिक जतन कर रहे हैं। प.पू. स्वामिजी का प्रवचन जिस-जिसने सुना होगा उसमें **'आत्मीयता'** शब्द जरुर सुना ही होगा। यहाँ तक कि प.पू. स्वामिजी का हीरक जयंती का नाम भी **'आत्मीय महोत्सव'** ही था। इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि प.पू.स्वामिजी हमें सच्चे अर्थ में आत्मीय बनाना चाहते हैं। पर, **'आत्मीयता'** वास्तव में किसे कही जाती है, उसे समझना अत्यंत आवश्यक है। प.पू. स्वामिजी ने हम सब पर अत्यधिक कृपा करके **'आत्मीयता'** का सही अर्थ 'साधक सुधा' पुस्तक में बताया है। तो आईये, हम सभी प.पू. स्वामिजी द्वारा बताये एक-एक शब्द का गहन अर्थ समझ कर सच्ची आत्मीयता के रास्ते पर चलने अग्रसर हों और प.पू. स्वामिजी की मर्जी के मुताबिक वर्त कर आत्मीय बनने का दृढ़ संकल्प करके सच्ची 4 मई मनाये.....

आत्मीयता

* 'मैं प्रभु का और प्रभु के जो हैं वे सभी मेरी आत्मा के सच्चे सगे हैं–ऐसी समझदारी से भक्तराज पर्वतभाई, गोरधनभाई, रामभंडेरी, बेलो सथवारो वगैरह सभी जीवन मुक्त जीवन जी गए। आज ऐसे ही आत्मीय सेवक हैं। प्रभु के संबंध वाली आत्मीयता वही हम सब की पूँजी है'।
* **सच्ची आत्मीयता वही कि.....**
  - भक्तों के लिए मिट जाने का सहज मन हो.....
  - भक्तों की सेवा किए बिना रहा ही नहीं जाए.....
  - भक्त प्राणों से भी अधिक प्यारे लगे, मानें.....
  - कोई सत्संगी-भक्त तुम्हारा अपमान करके उसके घर से तुम्हें निकाल दे, तब 'यह स्वामी का घर है और स्वामी ने ही अपमान करके मुझे निकाला है, यूं मानें.....,
  - जहाँ आत्मीयता हो वहाँ 'भूल' और 'कसनी' ये दो शब्द नहीं होते।
* **नाम 'आत्मीयता' इसी का कि.....**
  - जैसे प्रभु के स्वभाव जँचते हैं,वैसे मुक्तों के जँचे.....
  - एक दूजे के दर्शन से भीतर में सहज आनंद हो.....
  - एक-दूजे को मिलना सहज जँचे.....
  - मुक्तों की याद सहज आया करे ही, याद करना ना पड़े.....
  - आपके कैसे भी लीला-चरित्रों को सेकेण्ड में ही भूला दें.....

* **आत्मीयता के तीन लक्षणः-**
  - शब्द लगे नहीं।
  - 'आनंद' हमारा भोजन बने।
  - भक्तों के दर्शन से स्वयं का मान भूल जायें।
* आत्मीयता की अंतिम अवस्था है-'आनंद'।
* इकट्ठे मिल कर सेवा करनी यह तो स्थूल आत्मीयता है? लेकिन, सभी के दोष-स्वभाव जँचा कर प्रभु के भाव से सेवकों की सेवा करना और सभी के साथ रसबसता बढ़ाना-यह सर्वोपरि आत्मीयता है।
* आत्मीयता और दीनभाव यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
* आत्मीयता और आनंद में कभी भी विभाजन नहीं होता।
* जैसे-जैसे आत्मीय होने का प्रयत्न करेंगे वैसे-वैसे महिमा की धारें भीतर में फूटेंगी।
* **आत्मीयता के बिना**
  - सत्संग और भक्ति का आनंद लूट नहीं सकेंगे।
  - सच्चा सम्बन्ध संभव ही नहीं।
  - मैं स्वरूप का, प्रभु का, सभी प्रभु के.....ऐसी गांठ, ऐसी चेईन, ऐसी निष्ठा, ऐसी प्रीति जितनी मजबूत होगी-उतना ही तुम्हारे चैतन्य में तुम आत्मीयता का आनंद लूट सकोगे, अनुभव कर सकोगे। इतने ही तुम आत्मीय बनोगे।
* **.....आत्मीयता तब तक नहीं है-**
  - जब तक बुद्धि की गिनती है।
  - जब तक बुद्धि से देखेंगे।
  - जब तक बुद्धि से प्रेरित होकर चलेंगे।
* आत्मीयता में तीन बात खड्डे कर जाती है-
  (1) जड़ समझ (2) हठ, मान, ईर्ष्या (3) मनमुखी जीवन।
* ''ऐसा ही होना चाहिए और ऐसा नहीं ही होना चाहिए''-वह कभी भी आत्मीयता के धागों से जुड़ ही नहीं पायेगा।
* आत्मीयता में आनन्द है। गुण में आनन्द नहीं। गुण तो बोझ रूप है।
* आत्मीयता के बिना का कोई भी साधन केवल सात्विक अहम् का ही पोषण करता है।
* **आत्मीयता में-**
  - अवगुण भी गुण के रूप में दिखाई पड़े।
  - बदसूरत भी सुन्दर ही लगे।
  - सिर्फ संबंध का आनंद और वात्सल्य ही हो।
* आत्मीयता को यदि चरम सीमा पर ले जायें तो दोष-स्वभाव हमें परेशान करने असमर्थ हो जाएं।
* जैसे-जैसे आत्मीयता बढ़ेगी वैसे-वैसे देहभाव व देहाभिमान को भूलते जाएंगे।
* जैसे-जैसे निष्ठा बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे आत्मीयता बढ़ेगी। जैसे-जैसे तुम्हारे पिता-सहजानंद स्वामी का प्रभाव तुम्हारे चैतन्य में प्रगट होता जाएगा वैसे-वैसे आत्मीयता उत्तरोत्तर बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे स्वधर्मयुक्त टॉप जीवन की शुरुआत होगी। ना के बराबर-सा सामान्य स्वधर्म या सामान्य नियम का भी तुम उल्लंघन नहीं कर सकोगे। तुम्हारे मन-बुद्धि (यूं करने) असमर्थ हो जाएंगे।
* जैसे-जैसे आत्मीयता बढ़ेगी, वैसे-वैसे संबंध बढ़ेगा। जैसे-जैसे संबंध बढ़ेगा, वैसे-वैसे हृदय में प्रभु की मूर्ति बैठती जाएगी।
* सत्संग के काम को बुद्धि से हल करने के बजाय संघर्ष करता रहे और स्वरूप को जैसा पसंद हो वैसे वर्तता जाए, उसका नाम आत्मीय सेवक।
* काकाजी, पप्पाजी और कांति काका ने ऐसी ही आत्मीयता का दर्शन करवाया है। तीनों दिव्य पुरुषों की आत्मीयता कैसी बेमिसाल !
* .....और बापा भी सत्संग समाज में छोटे से छोटे-अल्प संबंध वाले के आत्मीय बनकर जी गए ही हैं ना! हमें उनके बेटे बनना है। तो केवल उनके ही पदचिन्हों पर.....

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ.....

आनंदोब्रह्म

'गुरुभक्ति यज्ञ' उत्सव पर मंदिर के संतों, सेवकों, बहनों के स्टाफ द्वारा अत्यधिक भक्ति की भावना से करी सेवा के फलस्वरूप प्रसन्न होकर प.पू. गुरुजी मंदिर के सारे स्टाफ को 26 मार्च'97 से 1 अप्रैल'97 तक नैनीताल-रानीखेत ले गये।

26 मार्च'97 की सुबह 6.30 पर दिल्ली से निकल कर मुरादाबाद में प.भ. अतुल अग्रवाल जी के यहां जलपान करके काशीपुर में प.भ. मूलचंदजी के दामाद प.भ. अरविन्दजी के यहां दोपहर को ठाकुरजी का थाल-भोग लगाया। प.भ. अरविन्दजी व परिवार की तो खुशी का ठिकाना ही नहीं था। काशीपुर से हलद्वानी होते हुए रात को करीब 8.00 बजे नैनीताल क्लब पहुंचे। वहां प.भ. कपूर साहब के साले मा. श्री दीवान साहब द्वारा नैनीताल क्लब में हमारे रहने की सुविधा कर रखी थी। इस अनुपम सेवा के लिए श्री दीवान साहब को इस अनुपम सेवा के लिए सभी ने दिल से धन्यवाद दिया।

27 मार्च की सुबह पूजा में धून-भजन करके गुरुजी ने साधकों को सूझ देने 'ब्रह्मप्रवाह' में से पत्र समझाते हुए मार्मिक

कथावार्ता करी। नाश्ता करके सभी नैनीताल घूमते-फिरते झील में बोटिंग करके प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में भजन आदि गाकर खूब आनंद किया। वहां rope way से नीचे उतरते हुए शालिनी आंटी नाम की एक बहनजी प.पू. गुरुजी के प्रथम दर्शन से ही खूब खींच गई और बराबर में ही अपने होटल-अंकुर प्लाजा में आने का आग्रह किया। प.पू. गुरुजी वहां उनके घर गए.... शालिनी आंटी ने पहली जो प्रार्थना कहलवाई कि-'गुरुजी को बोलो-मेरा आखिरी जन्म करवा देना.....' उससे स्पष्ट लगा कि पूर्व की मुक्त ही हैं। Rope way पर ही कोलम्बस झूले के मालिक श्री दीपक ठुकरालजी भी सम्पर्क में आए और प.पू. गुरुजी के दर्शन करके बहुत भावविभोर हो गए। उन्होंने भी प.पू. गुरुजी को अपने घर पर बुलाया। सच है कि ऐसे बड़े संतों का कहीं भी जाना-करना चैतन्यलक्षी ही होता है। इसी दौरान प.पू.गुरुजी को पता लगा की मा. गवर्नर साहब श्री रोमेश भंडारीजी नैनीताल आए हुए हैं। प.पू. गुरुजी ने गवर्नर हाऊस में फोन लगा कर उनसे बात करी। पहले से ही अच्छी तरह परिचित होने के कारण मा. श्री रोमेश भंडारीजी ने प.पू. गुरुजी को शाम को 7.00 बजे मिलने आने के लिए कहा। शाम को 7.00 बजे मा. श्री भंडारी साहब बहुत ही अच्छी तरह मिले। प.पू. गुरुजी से मिल कर उन्हें बहुत ही अपनेपन का एहसास हुआ।

28 मार्च'97 की सुबह भी भजन-प्रार्थना, कथावार्ता की छोटी-सी सभा करने के पश्चात् 'किलबरी' नाम के spot पर घूमने गये। वहां भी प.पू. गुरुजी ने साधकों के लिए अत्यंत आवश्यक साधना मार्ग की निचोड़ रूप बातें करीं, जिससे हमारी साधना छोटी व सरल बन पाये.....

29 मार्च'97 की सुबह प.पू. गुरुजी की कथावार्ता का लाभ लेकर प.भ. दीपकजी के यहां गये। वहां से शालिनी आंटी अपनी एक सहेली के यहां ले गईं। वहां से रानीखेत जाते हुए रास्ते में भीमताल व कैंचीधाम वैष्णवी देवी का मंदिर देखते हुए शाम 4.30 के करीब रानीखेत पहुंचे। वहां शाम को तेज बरसात होने के कारण सभी ने प.पू. गुरुजी के ही पास बैठकर आनंद किया।

30 मार्च की शाम को चार बजे प.पू. काकाजी के संबंध वाले पुराने सत्संगी प.भ. चन्दनसिंह बिस्टजी के यहां प.पू. गुरुजी पधरामनी के लिए गये। रात को ठहरने की जगह पर दिल्ली के यमुना विहार निवासी प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी संतों को मिलने आए। प.पू. गुरुजी के प्रथम दर्शन करके ही अत्यंत भावविभोर हो गये।

31 मार्च को दिल्ली वापिस आने निकलना था। सो सारा सामान वगैरह पैक करके रानीखेत में ही प.भ. चंदन सिंहजी की लड़की के घर पधरामनी के लिए गये। वहां से रास्ते में दिल्ली मंदिर के सेवक **प.भ. राकेशजी** के गांव दोपहर को प्रसाद लेना था। पर हम रात को 8.00 बजे के करीब तो नगीना पहुंचे। तब भी नगीना पर प.भ. राकेशजी लेने के लिए खड़े थे ! आश्चर्य की बात कि प.पू. गुरुजी के आने की खुशी में प.भ. राकेशजी अपने गांव में जाने का रास्ता ही भूल गये, जो कि खूब करीब भी था। मुश्किल से दो किलोमीटर का फासला होगा। सुनते हैं कि-गोपियाँ कृष्ण की बांसुरी सुनकर बावरी हो जाती थी। महाराज के समय का ब्रह्मानंद स्वामी का प्रसंग भी सुना है। पर, यह तो अपनी आँखों से देखा। रात अधिक हो जाने के कारण व प.भ. राकेशजी की अत्यधिक भावना देख कर प.पू. गुरुजी व हमारा सारा ग्रुप वहीं गांव में रात को रुक गया। प.भ. राकेशजी का सारा परिवार स्वयं को धन्य-धन्य अनुभव कर रहा था। जैसे सुदामा की झोपड़ी में स्वयं भगवान कृष्ण पधारे हों। 1 अप्रैल की सुबह वहां से सब भावभीनी विदाई लेकर दिल्ली के लिए रवाना हुए। प.पू. गुरुजी पानीपत में प.भ. पुनीत भईया के यहां जाते हुए दिल्ली लौटे। यूं नैनीताल-रानीखेत की 'आनंदोब्रह्म' यात्रा कई स्मृतियों के साथ सम्पन्न हुई।

✡✡✡

'आनंदोब्रह्म' का एक और पहलू....गुजरात एपार्टमेंट के हमारे प.भ. कीर्तिभाई जानी परिवार की काफी समय से इच्छा थी कि प.पू. गुरुजी एक-दो दिन उनके घर पर रुक कर दर्शन, सेवा, समागम का मौका दें। उनकी भावना के वश होकर प.पू. गुरुजी ने 5 अप्रैल व 6 अप्रैल को शनिवार-रविवार की सभा ही वहां रख दी। गुजरात एपार्टमेंट यानि-प.पू. गुरुजी का गोकुल...प.भ. राकेशभाई, प.भ. कौशिकभाई, प.भ. विनोद भाई (दोनों) प.भ. विजयभाई, संघवी परिवार, प.भ. हर्षदभाई पटेल वगैरह ने खूब परिश्रम लेकर भक्तिभाव से सारी व्यवस्था करी। प.पू. गुरुजी शनिवार की शाम को वहां पहुंच गये....10-12 परिवार हैं, सभी के मुख पर अत्यधिक आनंद था। प.भ. श्री शांतिभाई पटेल भी अपने परिवार के साथ वहां आए थे....करीब सवा सौ हरिभक्तों ने भजन व सत्संग का लाभ लिया व प्रसाद लेकर वहीं भक्तों के घर रात्रि विश्राम किया।

6 अप्रैल '97 की सुबह प.पू. गुरुजी ने पूजा में धून्य करवाई और फिर नाश्ता करके रविवार की सभा करी। सभा में 'ब्रह्मप्रवाह' में से प.पू.काकाजी के चार-पाँच पत्रों का निरुपण करके सब को आनंद के साथ-साथ आध्यात्मिक सूझ दी। सभा के बाद सभी ने वहीं प्रसाद लिया और मंदिर आने निकल गए....दोनों दिन सभा में सभी को एक आध्यात्मिक शिविर जैसी अनुभूति हुई....सब परिवारों की आपसी एकता व अपनापन आने वाले हर को भीतर तक स्पर्श कर गया....इससे भी अधिक विदाई के समय वहां पर भी सभी की आँखों में आँसू थे-जबकि वे सब तो हर रोज़ मंदिर आने के व्यसनी हैं।

स्वामी की बातें

547. अक्षर का तेज यदि दिखाई दे, उसमें भी माल नहीं मानना। तो ऐश्वर्य में माल नहीं मानना, उस बारे क्या कहना? अक्षर का तेज सुखरूप तो है, लेकिन पुरुषोत्तम (महाराज) की मूर्ति के आगे वह कुछ भी नहीं। यूं समझो इसे 'उपासना' कही जाये। *प्र.5,392*

548. केशवजीवनदास जी ने स्वामी को कहा कि प्रागजी वगैरह आपको मूल अक्षर कहते हैं, वह मेरी समझ में नहीं आता। मैं विश्वासी हूं, तो जैसा है वैसा कहो। तब स्वामी ने कहा-मैं मूल अक्षर हूं ऐसा तू मानना। यदि दूसरा कोई अक्षर होगा, तो वह मेरा और उसका झगड़ा ठहरा। तू मेरा भरोसा कर। यूं दो-तीन बार कहा। *प्र-5,393*

549. महाराज स्वधाम पधारने वाले थे, तब मुझे एकांत में मिले, जैसे श्रीकृष्ण और उद्धवजी एकांत में मिले थे वैसे। *प्र-5,394*

550. किसी ने स्वामी को कहा कि ये प्रागजी को आपने ऐश्वर्य दिया है सो वह बहक गया है। इसलिए उसका भी शेखजी की तरह करो। तब स्वामिजी बोले-यह ऐरा-गैरा नहीं हुआ, यह तो पाताल तक पहुंची हुई नींव है, सच्ची प्रसन्नता का फल है। *प्र-5,395*

551. इसमें (ऐसे सत्संग में) रहकर नियम नहीं पाले, उस बारे क्या कहें? और नियम तो एकदम ठीक रखे, पर मंदिर, आचार्य और बड़े साधु की बुराई करे उससे बुरा कौन ! वह तो उससे भी बुरा है। *प्र-5,396*

552. सूरत से चल पड़े और कीम नदी में उतरे। वहाँ ब्रह्मचारी ने अच्छे-अच्छे मिष्ठान थाल में भरकर रखे। तब महाराज बोले-हम त्यागी लोगों को ऐसा भारी-भारी खाना ठीक नहीं। फिर सत्तू मँगाया। उसमें भी शक्कर नहीं डाली और नमक व सत्तु खाया। *प्र-5,397*

553. बातें करके दूसरों का द्रव्यादिक छुड़वाते हैं, लेकिन हम त्यागियों को भी यह करना है। *प्र-5,398*

554. ग्राम्यवार्ता-इधर उधर की बातें किया करें और उसमें दूसरों को भक्ति मनवायें ! बड़े हों उन्हें कोई कह भी नहीं सकता और कोई यदि कह भी दे तो भक्ति की आड़ लेकर उसे डांट कर चुप कर दे। ऐसे में से अपने आपको बचा लेना हो, उसे कई बहाने निकाल कर वहाँ से खिसक जाना। *प्र-5,399*

555. हृदयग्रंथि तो एक स्त्री को ही कहा है। दूसरे किसी विषय को हृदयग्रंथि लिखते नहीं। सो, इसके दोष तो एकांतिक संत जानता है। दूसरा, त्यागी हुआ हो तो भी, उसे उसमें कुछ सुख बुद्धि रह जाती है, और कई बातें (खुलकर) कहने में परेशानी आती है, सो-वह कही नहीं जाए। *प्र-5,400*

556. दो प्रकार के साधु व सत्संगी हैं। उसमें एक को विषय मिले तो खुश हो जाए और दूसरे को विषय टले तो वह प्रसन्न हो जाए। *प्र-5,401*

557. घर से जब आते हैं तो दो प्रकार की गरज होती है। इस लोक की व परलोक की। उसमें से एक परलोक की गरज रहे ऐसे तो विरले ही। क्योंकि, ऐसा कहने वाले नहीं मिलते, तो जीव क्या करेगा? बाकी, इस लोक में चिपकाए ऐसी बातें बहुत मिल जाएंगी। *प्र-5,402*

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 3.5.97 शनिवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 4.5.97 रविवार – प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसाद स्वामिजी की जन्म जयंती (गांव पादरा-गुजरात में धूमधाम से मनायेंगे)
(3) दि. 9.5.97 शुक्रवार – अखात्रीज
(4) दि. 10.5.97 शनिवार – ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज स्वधामगमन दिन
(5) दि. 15.5.97 गुरुवार – **'अनिर्देश' में आज से 18 जून '97, बुधवार तक 'जपयज्ञ' का प्रारम्भः रोज़ सुबह** 6.30 **से** 8.00
(6) दि. 18.5.97 रविवार – एकादशी, व्रत
(7) दि. 20.5.97 मंगलवार – नृसिंह जयंती, फराली व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Pakaging and Allied Industries** C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110064